ग्लोब कार्यक्रम

जहाँ है हरियाली।
वहाँ है खुशहाली।।

AMERICANCENTER

सौजन्य से : जन मामले विभाग, अमेरिकी दूतावास, नई दिल्ली

ग्लोब कार्यक्रम

ग्लोब कार्यक्रम एक अनूठा कार्यक्रम है जिसकी शुरूआत सन् 1994 के अप्रैल माह में अमेरिका के उप–राष्ट्रपति अलगोर द्वारा की गई थी। यह एक प्रायोगिक और सामाजिक कार्यक्रम है जो पूर्ण रूप से विज्ञान और शिक्षा पर आधारित है। यह कार्यक्रम अध्यापकों, स्कूली छात्रों और वैज्ञानिकों को एक साथ जोड़ता है। ग्लोब स्कूली बच्चों, अध्यापकों और वैज्ञानिक समुदाय को कड़ी बनाकर उनको पर्यावरण एवं पृथ्वी के विषय में शोध और चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस कार्यक्रम का मुख्य केन्द्र स्कूली विद्यार्थी हैं जो इस कार्यक्रम के द्वारा पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर डाटा/आधार सामग्री एकत्रित करते हैं।

ग्लोब कार्यक्रम एक विश्व व्यापक तंत्र के द्वारा प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों में अमल में लाया गया है। वर्तमान में 1400 से अधिक विद्यालय विश्व के 112 देशों से **ग्लोब** कार्यक्रम में प्रतिभागी हैं। इस कार्यक्रम में लाखों स्कूली छात्र निरंतर भाग ले रहे हैं। इस कार्यक्रम की विशेषता यह है कि यह कार्यक्रम विद्यार्थिओं को **ग्लोब** वैज्ञानिक से सीधा संपर्क करने में और उनसे बातचीत करने में सहायता करता है। इससे विद्यार्थियों को संकलित 'डाटा' का महत्व समझने में और उसका अन्वेषण करने में सहायता मिलती है। **''ग्लोब वैज्ञानिक''** संकलित आधार सामाग्री पर विद्यार्थियों से और अध्यापकों से विचार विमर्श करते हैं और उनके द्वारा पूछे गए प्रश्न के भी उत्तर देते है। वैज्ञानिक छात्रों को **ग्लोब** कार्यक्रम संबंधी पुस्तकों की सूची भी बताते हैं जिससे विद्यार्थियों को आधार सामग्री समझने में सहायता मिलती है।

ग्लोब कार्यक्रम के मुख्य उदेश्य :–

(i) विश्व में पर्यावरण संबंधी जागरूकता का संचार करना और बढ़ाना।

(ii) विद्यार्थियों के बीच विज्ञान एवं गणित जैसे जटिल विषयों में रूचि बढ़ाना जिससे वह पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर चिंतन करें और उन्हें सुलझाने का प्रयास करें।

(iii) **ग्लोब** कार्यक्रम छात्रों को विज्ञान और गणित में उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहन देता है।

(iv) यह कार्यक्रम एक प्रायोगिक कार्यक्रम है जिसमें छात्र–छात्राएं अपने हाथों से ग्लोब उपकरणों का प्रयोग करना सीखते हैं जिससे उनको अपने विज्ञान के पाठ्यक्रम को समझने में सहायता मिलती है।

ग्लोब कार्यक्रम की विशेषताएं :–

(i) यह कार्यक्रम अध्यापकों व छात्रों की विज्ञान संबंधी क्षमता की वृद्वि में तो सहायक है ही साथ ही उनको स्थानीय पर्यावरणिक विषयों का समाधान निकालने में भी प्रोत्साहित करता है।

(ii) यह कार्यक्रम पृथ्वी विज्ञान और जलवायु परिवर्तन जैसे समस्यात्मक विषयों पर चिंतन तथा विचार करने के लिए छात्रों को बढावा देता है।

(iii) इस कार्यक्रम की सहायता से छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण में वृद्धि होती है। इससे यह कई पर्यावरण आधारित समस्याओं का विश्लेषण आसानी से कर पाते है।

(iv) यह छात्रों की प्रेक्षण क्षमता में वृद्धि करता जिसकी सहायता से वे संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण करते हैं।

ग्लोब विद्यार्थी

इस कार्यक्रम के अंर्तगत ग्लोब विद्यार्थीयों को निम्न लिखित कार्य करने होते हैंः—

(i) पर्यावरण संबंधी आधार सामाग्री एकत्रित करना और उसे ग्लोब डाटा बेस पर अंकीत करना।

(ii) ग्लोब वेब पर आधारित टूल्स की सहायता से नक्शे और मानचित्र बनाना।

(iii) अपने शोध और अन्वेशन को वेबसाइट पर दर्ज कराना।

(iv) संकलित किए गए 'डाटा' का विश्लेषण करना और फिर उसकी सहायता से नवीन शोध प्राजेक्ट की रचना करना।

(v) अपने किए गए शोध/खोजों के विषय में ग्लोब वैज्ञानिको' से विचार विमर्श करना।

(vi) ग्लोब विद्यार्थीयों/छात्रों का सबसे प्रमुख कार्य है कि अपने द्वारा किए गए खोज अथवा शोधों को **''ग्लोब अध्ययन अभियान''** अथवा (Global Learning Expedition) में प्रस्तुत करना।

शिक्षा

ग्लोब कार्यक्रम में अध्यापक ग्लोब प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लेते है। इन कार्यशालाओं में उनको ग्लोब कार्यक्रम के सभी प्रोटोकॉल्स सें अवगत कराते है और उनको इन प्रोटोकॉल्स संबंधी सभी जानकारी दी जाती है। वह अपने हाथों से ग्लोब उपकरणों द्वारा आधार सामाग्री/डाटा एकत्रित करते है। फिर संकलित आकडों को ग्लोब वेबसाइट में

दर्ज करना सीखते हैं। इन सब क्रियाओं को करते हुए वे आगे यह सब अपने स्कूल के छात्रों को भी सिखाते हैं।

विज्ञान

ग्लोब कार्यक्रम के अंतर्गत मुख्यतः प्रोटोकॉल्स होते हैं –

1. वायुमंडलीय प्रोटोकॉल
2. हाइड्रोलोजी प्रोटोकॉल
3. मृदा प्रोटोकॉल
4. भू–अच्छादन प्रोटोकॉल

1. **वायुमंडलीय प्रोटोकॉल** :– मेघ प्रेक्षण, मेघाच्छादन एवं प्रकार, अधिकतम, न्यूनतम तापक्रम मापना, वर्षण एवं उसका पी.एच.।
2. **हाइड्रोलोजी प्रोटोकॉल** :– जल की पारदर्शिता का मापन, पी.एच., विद्युत चालकता, लवणता।
3. **मृदा प्रोटोकॉल** :– मृदा स्तरों की गहराई, मृदा का रंग मृदा के तापमान का मापन, मृदा का संगठन, मृदा की संरचना।
4. **भू–आच्छादन प्रोटोकॉल** :– भू–आच्छादन के प्रकार, पौधों की ऊँचाई एवं उनके प्रकार, प्रधान तथा उपप्रधान जाति की पहचान इत्यादि।

हमारे विषय में

ग्लोब कार्यक्रम एक विश्व व्यापी क्रियात्मक कार्यक्रम है जो पूर्णतः विज्ञान और शिक्षा पर केंद्रित है। यह कार्यक्रम प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में नियमित रूप से चल रहा है।

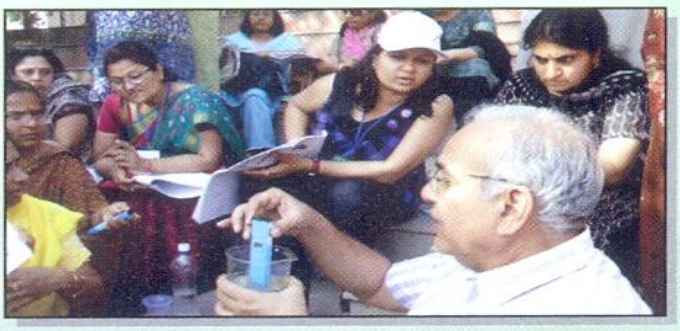

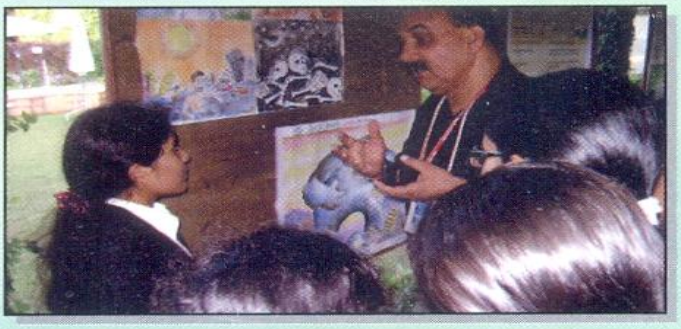

भारतीय पर्यावरण समिति (दिल्ली) ग्लोब कार्यक्रम ऑफिस (अमेरिकी) के सहयोग से ग्लोब एशिया पेसिफिक कार्यालय को संचालित कर रही है।

भारतीय पर्यावरण समिति ग्लोब कार्यक्रम को एशिया पेसिफिक के 16 देशों में समन्वित कर रही है।

अस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, फीजी, भारत, जापान, दक्षिण कोरिया, मालदीव, मार्शल, आईलैंड, माइक्रोनेशिया, नेपाल, न्यूजीलैंड, पालाउ, फीलीपिन्स, श्रीलंका और थाईलैंड। कुल मिलाकर 16 एशियन देश ग्लोब कार्यक्रम में प्रतिभागी है।

ग्लोबल रिजनल/क्षेत्रीय आफिस ने एक डाटाबेस भी तैयार है जिस पर हमने सभी ग्लोब प्रशिक्षकों की सूची भी बनाई है। इस वेब पेज पर ग्लोब कार्यक्रम एशिया पेसिफिक के अंतर्गत होने वाली सभी गतिविधियां एवं कार्य भी अंकित किए जाते है और उनकी फोटो भी डाली जाती है। इस वेबबेस पर सभी देशों के संयोजकों की भी सूची डाली गई है।

रीजनल ऑफिस एशिया पेसिफिक छात्रों के लिए जलवायु परिवर्तन अभियान की शुरूआत करने जा रहा है जिसमें विद्यार्थी जलवायु परिवर्तन संबधी शोध एवं कार्य कर सकेंगें।

ग्लोब रीजनल/क्षेत्रीय ऑफिस की गतिविधियों का उल्लेखः—

ग्लोब रीजनल ऑफिस एशिया पेसिफिक 2009 में प्रारम्भ हुआ था। तब से अब तक हमने कई कार्य और गतिविधि की हैंः—

(i) क्षेत्रीय वेबसाइट का निर्माण तथा उसमें नियमित रूप से क्रियाकलापों की सूची डालना।

क्षेत्रीय/रीजनल ऑफिस एक ग्लोब वेबसाइट चला रहा है जिसमें नियमित ग्लोब संबंधी अपडेट डाली जाती है। इस वेबसाइट पर अन्य देशों की ग्लोब वेबसाइट की सूची और लिंक उपलब्ध है। औसतन एक महीने में 4,500 लोग ग्लोब वेबसाइट पर जाते है और उस पर उपलब्ध जानकारियों को देखते है। इस वेबसाइट का वेब ऐडरस www.globaindia.org/asiapasific है।

जलवायु परिवर्तन अभियान एवं छात्रों का एक्सचेंज कार्यक्रम गोवा, भारत

यह एशिया पेसिफिक रीजनल आफिस की सालाना गतिविधि है। इसे हर साल आयोजित किया जाता है। इस कार्यशाला में थाइलैंड से बहुत से स्कूली छात्रों को गोवा बुलाया जाता है। इस कार्यशाला में छात्र छात्राएं अपने किए गए शोध प्रोजक्ट का विवरण देते हैं। इसमें भारतीय छात्र भी हिस्सा लेते हैं।

छात्र शैक्षिक विनिमय कार्यक्रम अयुथ्या थाइलैंड

इस कार्यक्रम का आयोजन थाइलैंड देश के एक रमणीक शहर अयुथ्या में हुआ था। इसमें थाई और भारतीय स्कूली छात्रों के शोध प्रोजेक्ट पर चर्चा हुई और दोनों देशों के छात्रों ने अपने प्रोजक्ट प्रस्तुत किए। इस कार्यशाला में 30 भारतीय छात्रों को ले जाया गया था। ये सभी भारतीय छात्र ग्लोब छात्र थे, उन्होंने वहाँ पर अपने शोध कार्य तथा अनुभवों की चर्चा थाई बच्चों से की।

देश संयोजकों (Country Coordinators) की क्षेत्रीय सभा (ढाका बांग्लादेश)

इस सभा का आयोजन वर्ष 2010 में किया गया था। इसे सम्पन्न करने में ग्लोब कार्यक्रम कार्यालय (अमेरिका) का भी बहुत सहयोग मिला। यह देश संयोजकों (Country Coordinators) की दूसरी सभा

थी। इसका आयोजन बांग्लादेश की राजधानी ढाका में किया गया था।

जैव विविधता शिक्षा एक्सपीडीशन / अभियान हाँगकांग :–

ग्लोब कार्यक्रम के अधिक प्रचार प्रसार करने हेतु 2010 में जैव विविधता शिक्षा अभियान शुरू किया गया। इसका मुख्य लक्ष्य पृथ्वी विज्ञान का प्रचार करना था। इसमें दिल्ली के बहुत से ग्लोब छात्रों एवं अध्यापकों ने हिस्सा लिया। इस अभियान के द्वारा छात्रों ने ग्लोब कार्यक्रम के महत्व को समझा और यह अभियान बहुत सफल रहा। इस कार्यक्रम के तहत छात्रों ने हाँगकांग बोटानिकल उद्यान और हाँगकांग वैटलैंड पार्क का भ्रमण किया।

पृथ्वी दिवस का सफल आयोजनः–

ग्लोब क्षेत्रीय / रीजनल ऑफिस ने 2010 में ही पृथ्वी दिवस का सफल आयोजन किया। इसमें बहुत से ग्लोब छात्रों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के सफल आयोजन में अमेरिकन दूतावास के जन मामले विभाग का भी सहयोग रहा। इस कार्यशाला में पर्यावरण संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं, जैसे–नुक्कड़ नाटक, वाद–विवाद आदि।

प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए कार्यशाला :–

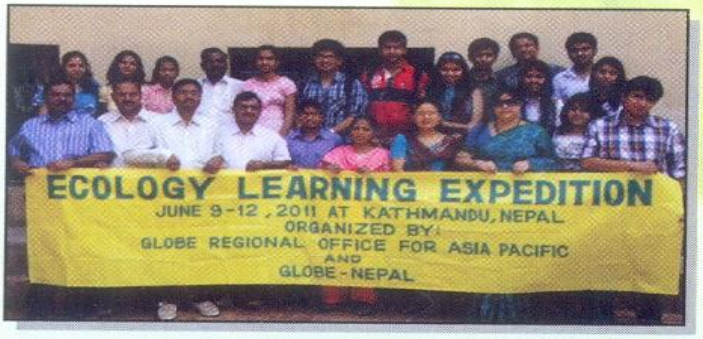

रीजनल / क्षेत्रीय ऑफिस प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए भी कार्यशालाएँ आयोजित करता है। वर्ष 2009 में एक ऐसी ही कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इसमें भारत के अलावा 2 सहभागी भूटान तथा नेपाल से आए थे। यह कार्यशाला भी जन मामले विभाग, अमेरिकन सेंटर के सहयोग से सम्पन्न हुई।

ग्लोब विद्यालयों का भ्रमण :–

ग्लोब कार्यक्रम के निरंतर प्रचार प्रसार के लिए क्षेत्रीय ऑफिस वैज्ञानिकों तथा ग्लोब एक्सपर्टों के नियमित भ्रमण ग्लोब विद्यालयों में आयोजित कराता रहता है।

ग्लोब कार्यक्रम एशिया पेसिफिक के लिए डाटा बेस तैयार करना :–

ग्लोब कार्यक्रम रीजनल ऑफिस ने ग्लोब कार्यक्रम पर आधारित एक डाटा बेस तैयार किया है। इस डाटा बेस में ग्लोब कार्यक्रम संबंधी सम्पूर्ण जानकारियां उपलब्ध हैं जैसे

– ग्लोब देशों की सूची, ग्लोब देश संयोजकों की सूची, प्रशिक्षकों एवं मास्टर प्रशिक्षकों की सूची इत्यादि।

बीसीसी / आईसी सामग्री तथा पुस्तकों की रचनाः–

रीजनल ऑफिस ने ग्लोब पुस्तकों एवं सामग्री की भी रचना की है। इसमें सभी प्रोटोकॉल और ग्लोब संबंधित कार्यों की जानकारियाँ पढ़ी जा सकती हैं। इसके अलावा ग्लोब के प्रचार प्रसार के लिए रीजनल ऑफिस ने टीशर्ट, टोपी इत्यादि भी बनवाई हैं।

ग्लोब अध्ययन सामग्री का हिन्दी में अनुवादः–

यह ग्लोब एशिया पेसिफिक कार्यालय का नवीन प्रयास है। इसमें हम सभी अध्ययन सामग्री जैसे कि ग्लोब, मानचित्र, पुस्तकों इत्यादि का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं। इसमें हमें अमेरिकन सेंटर के जन मामले विभाग का भरपूर सहयोग मिल रहा है।

जहाँ है हरियाली।
वहाँ है खुशहाली।।

AMERICANCENTER

संपर्क करने का पता :
डा. देशबन्धु, क्षेत्रीय निदेशक,
ग्लोब क्षेत्रीय सहायता डेस्क कार्यालय, एशिया प्रशांत
दूरभाष : 91-11-22046823/24, मोबाइल : 91-9810180133
फैक्स : 91-11-22523311
ई–मेल : iesindia@gmail.com

भारतीय पर्यावरण समिति
यू–112, विधाता हाउस (तीसरी मंजिल), विकास मार्ग,
शकरपुर, दिल्ली–110 092
वेबसाइट : www.globeindia.org/www.iesglobe.org

सौजन्य से : जन मामले विभाग, अमेरिकी दूतावास, नई दिल्ली